RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

पाषणकालीन शस्त्र

डॉ0 धनजी प्रसाद

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

प्राचीन भारत के पौराणिक काल में अस्त्र–शस्त्रों का विवरण बड़े ही महत्व का विषय है। पौराणिक काल में ऋषि–मुनियों ने अपने योगबल से विध्यास्त्रों का प्रयोग करते थे। और इन विध्यास्त्रों के बल पर असुरों का नाश एक अच्छे समाज की संरचना के लिए किया करते थे।

प्राचीनतम भारतीय पौराणिक ग्रंथों में बहुविधि शस्त्रास्त्रों का वर्णन मिलता है। धनुर्वेद वेद–क्रम का एक पूरा स्वतंत्र अंग ही है, जिसमें हथियारों का ही नहीं, उनकी उपयोगिता, प्रयोग–विधि यहां तक कि निर्माण–विधि का भी वर्णन किया गया है। पुराणों, स्मृतियों, संहिताओं और महाभारत–रामायण आदि के अतिरिक्त अनेक धर्मशास्त्रों में अस्त–शस्त्रों के प्रकार, उनके प्रयोग, उनकी शक्ति और उनके निर्माण में उपयोग की गई चीजों का वर्णन आता है।

तत्कालीन हथियार अधिकतर सोने, चांदी, तांबे, लोहे, लकड़ी, सीप आदि के होते थे। ऐसे अनेक अस्त्रों का भी वर्णन है जो आज के आदमी को चमत्कृत कर देते हैं।यही नहीं, दिव्यास्त्र भी कहा जाता है, के प्रचलन की भी चर्चा आई है। विभिन्न देवी–देवताओं के पास ऐसे दिव्यास्त्रों का होना बतलाया गया है। उदाहरण रूप में श्रीकृष्ण के पास सुदर्शन चक्र, अर्जुन के पास गांडीव, कर्ण के पास कवच–कुंडल, शिव के पास पिनाक धनुष आदि का वर्णन मात्रा उनके हथियार के रूप में नहीं, अपितु उनकी दिव्य शक्तियों के रूप में भी किया गया है। इनके रूप विविध थे। आकार भी अलग–अलग और संहार के तरीके भी अलग–अलग थे।

पुराण काल के शस्त्रास्त्रों की कलात्मकता का अनुमान उनके उस वर्णन से भी हो जाता है जो रूप, रंग और निर्माण–प्रक्रिया आदि में किया गया ह। विभिन्न पौराणिक चरित्र, इन अस्त्रों को धारण करने में जिस सुरूचि का परिचय देते हैं, उससे भी यह जाहिर हो जाता है कि तत्कालीन मनुष्य का सौंदग्र–बोध किस सीमा तक बढ़ा हुआ था।

कौटिल्य (ईसा से तीन सौ वर्ष वूर्प) ने चार प्रकार के धनुषों और छः प्रकार के बाणों का वर्णन किया है। ये चार प्रकार के धनुष हैं–

1. कार्मुक, 2. धनुष, 3. कोदंड, 4. द्रोण

कौटिल्य वर्णित छः प्रकार के बाणों को इस प्रकार गिनाया गया हैः–

1. वेणु, 2. शलाका, 3. शान, 4. शर, 5. गौधु, 6. नाराच

पौराणिक समय में महाभारत (वेदव्यास रचित) में जिन आयुधों का वर्णन है, उनमें से कुछ के आकार–प्रकार भी बतलाए गए हैं। यह क्रम इस प्रकार हैः–

अंकुश :– एक भाला, जिसमें दो मुंह होते थे। उन दिनों यह बहुत छोटे रूप में हाथी को हांकने के काम में लिया जाता था।

अंगुलित्राण :– जिस समय बाण संधान किया जाता था, उस समय इसे अंगुलियों पर पहना जाता था। एक तरह से अंगुश्ताना की तरह।

अंजलिक :– एक प्रकार का बाण। अनुमान है कि यह वाण अंजुलि के रूप में निर्मित होता था और इसमें अंगुलियों की तरह कई नोकें होती थी।

अंतर्भेदी :– एक ऐसा बाण, जिसकी नोक इतनी तीखी होती थी कि वह शरीर के पास तक निकल जाए।

अयः कणप :– एक ऐसा यंत्र, जिससे लोहे की गोलियां चलाई जाती थीं।

ओगड़ :– लोहे की गोली।

अर्धचंद्र :– अर्द्धचंद्र के आकार–प्रकार का बना हुआ बाण–मुख।

अशनि :– विशिष्ट बाण।

अश्मगदा :– एक किस्म की तलवार, यह बाणकोश में रखी रहती थी। किसी–किसी ने इसे बाणकोश में रखी मेखला से लटकता हुआ भी कहा है।

आग्नेयास्त्र :– इसे चलाने से आग फैल जाती थी। इसे दिव्यास्त्रों में माना गया है।

इषीकास्त्र :– यह सरकंडे का बनता था और आकार–प्रकार में बहुत हल्का होता था।

इषु :– दूर तक मार करने वाला एक बाण। यह काफी लंबा होता था। इसे लेकर कुछ लोगों ने व्याख्या की है कि यह भ्रामण और क्षेपण दोनों ही गतियों से चल सकता था।

एकघातिनी :– इसे विशिष्ट शक्ति माना गया है। यह एक तरह की सांग थी, जिससे केवल एक ही व्यक्ति को मारा जा सकता था।

कणप :– यह लोहे का बना हुआ एक हल्की किस्म का भाला होता था, जिसे हाथ से और धनुष द्वारा भी फेंककर मारा जा सकता था।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कचग्रहक्षेप :– यह एक ऐसा हथियार था, जिससे शत्रु के सिर को बालों से पकड़ा जा सकता था और फिर जोरों से पटकनिया दी जा सकती थी।

कुणप :– यह भी भाला था। लोहे का बनता था और फेंककर ही चलाया जाता था।

कुंत :– यह भाला बहुत हल्का होता था।

क्षरप :– एक बाण जिस की धारें बहद तेज होती थी।

गदा :– इसकी लंबाई चार हाथ होना बतलाया गया है। इसका सिरा भारी होता था और उसमें कई–कई बार छोटे–छोटे अनेक तीर लगे होते थे। ऐसी गदाओं को शूलयुक्त कहा जाता था।

गोशीर्ष :– लकड़ी के बेंट वाला एक सुंदर बरछा। इसकी अनुमानतः लंबाई डेढ़ हाथ बतलाई गई है। यह बीच में चौड़ा होता था। आकार में तिकोना।

चक्राश्म :– लकड़ी एक ऐसा यंत्र, जिससे दूर–दूर तक पत्थर फेंके जाते थे।

जिहम्यग :– यह एक ऐसा बाण था कि दिखने में दूसरे पर निशाना लगता दिखता था जबकि इसका निशाना असल में कोई तीसरा होता था। इसका उपयोग अधार्मिक माना जाता था।

तलत्र :– दस्ताना। यह चमड़े से बनता था।

तलवार :– इसे कहीं–कहीं असि भी कहा गया है।

तोमर :– यह हथियार सीधा होता था, इसका बेंट काठ का बनता था, जबकि इसके तीन हाथ लंबे सिरे पर एक लोहे का मोटा–सा सिरा लगा होता था। इस में गुच्छे के आकार में जंजीर लटकती थीं।

त्रिशूल :– तीन फलों वाला भाला।

नाराच :– इसके पांच पंख होते थे। यह पूरा का पूरा ठोस लोहे का होता था।

नलीक :– इस बाण को एक छोटी–सी नली में रखकर चलाया जाता था। इसे लेकर शस्त्र विशेषज्ञों का कहना है कि वस्तुस्थिति में यह धमाके से ठीक बंदूक की तरह चलता था और एक तरह से उससे कहीं ज्यादा खतरनाक मार करता था।

निस्त्रिंश :– एक छोटी तलवार।

पट्टिश :– एक काफी बड़े आकार का भाला था। वह पतला तो होता ही था, पर दुधारा भी बतलाया गया है।

परशु :– एक प्रकार की कुल्हाड़ी। इसे फरसा भी कहा गया है।

परिध :– गदा का एक रूप।

पाश :– रामायण और माहभारत ही नहीं, अन्य ग्रंथों में भी पाश का बहुतायत से युद्धों में उपयोग किया गया है। अग्नि पुराण के अनुसार यह एक हाथ चौड़ाई का होता था। इसक लंबाई नीति–प्रकाशिका के अनुसार दस हाथ होती थी, जबकि इसका फंदा एक बालिश्त का बतलाया गया है।

प्रस्वाप :– इस अस्त्र के एक प्रकार की गैस निकती थी, जिसके प्रभाव से सैनिक सो जाते थे।

प्रास :– सात हाथ लंबी बांस की छड़ पर लगा लोहे की नोक वाला बरछा।

भिंदिपाल :– यह रूल जैसा एक डंडा होता था। पर यह रूल की तरह सपाट न होकर टेढ़ा–मेढ़ा होता था और इसे तीन बार खाव ढंग से घुमाकर शत्रु की टांगों पर मार दिया जाता था। इसका सिर कुछ झुका हुआ होता था।

मुग्दर :– हथौड़े जैसे भयावह वजन का एक अस्त्र, जिसे फेंककर और किसी विशिष्ट यंत्र द्वारा तेजी से चलाकर भी मारा जा सकता था।

यष्टि :– भारी सिरे वाला मोटा, बड़ा डंडा।

लगुड़ :– दांत जैसी शक्ल वाला दो हाथ का लंबा डंडा।

वरूथ :– शत्रु–प्रहार से बचने के लिए इससे सारा रथ ढका जा सकता था।

शक्ति :– इसके आकार–प्रकार को लेकर कहा गया है कि यह एक विशेष अस्त्र होता था। इसे एक ऐसा सांग बतलाया गया है, जो दो हाथ लंबे आकार का होता था। इसकी तीखी धारें होती थी। इसे फेंकने या चलाने की विविध क्रियाएं थीं और हर क्रिया के परिणाम अलग–अलग होते थे। इसे सामान्यतः तिरछा ही मारा जाता था। इसकी चालन–क्रिया में इसे उठाकर पैंतरा बदलते हुए, घुमाना और फिर पैंतरा बदल देना होता था। यह कभी शत्रु को सिर्फ घाव देता था, कभी उसे काट डालता था, और कभी दूर के शत्रु को समाप्त कर देता था। इसकी मार से शत्रु का शरीर क्षत–विक्षत हो जाता था।

शूल :– बरछी का एक प्रकार।

हल :– इसे बलराम का अस्त्र कहा गया है। इसे शक्तिशाली हाथ ही उठा सकते थे। इसकी मार से बचना मुश्किल था।

स्थूण :– लगभग छः फूट लंबा होता था। सीधा होते हुए भी इसमें कई घनी गाठें बनी होती थी।

दिव्यास्त्र :– जैसा कि पूर्व में कहा गया है पौराणिक ग्रंथों में अनेक दिव्यास्त्रां की आश्चर्यजनक और अवश्विसनीय सी लगने वाली शक्ति दिखलाई गई है। इनमें से कुछ का वर्णन विशद् है। इस वर्णन में उनका वैशिष्ट्य कभी मंत्रबल में निहित रहा है और कभी तंत्रबल में अनेक दिव्यास्त्रों को पुराणों के अनुसार विशेष साधना और चिंतन से ही प्राप्त किया जा सकता था।

पौराणिक ग्रंथों में दिए गए उपरोक्त असत्रों क वर्णन के साथ–साथ यह भी स्थान–स्थान पर बतलाया गया है कि इनमें से कुछ अस्त्र एक–दूसरे के काट के रूप में भी प्रयोग किए जाते थे।

अग्निबाण या आग्नेयास्त्र द्वारा चल रही अग्नि वर्षा को रोकने के लिए प्रतिपक्षियों द्वारा पर्जन्यास्त्र का प्रयोग होता

था। इस तरह वर्षा के उपयोग से अग्नि का प्रभाव दूर किया जाता था। इसी तरह वायव्यास्त्र की काट के लिए दूसरे पक्ष का कोई महारथी पर्वतास्त्र का प्रयोग करता था। पर्वत जैसे अवरोध वायव्यास्त्र द्वारा तेजी से फैलाई जा रही आंधी को रोक दिया करते थे।

इस तरह पौराणिक काल में भी ऐसे अनेक अस्त्रों का वर्णन मिलता है जो अपनी भयावह और संहारकारी शक्ति से पूर्ण थे। ब्रह्मास्त्र नामक एक ऐसे संहारक अस्त्र की भी दिव्यास्त्रों में चर्चा की गई है जिसे ब्रह्मा की शक्ति माना जाता था। यह असाधारण हथियार समूह रूप में नाश का सर्जक बनता था। बीसवीं सदी में जिन घोर विध्वंसक हथियारों की रचना हो गई और जिनसे समूची मानवजाति को ही खतरा पैदा हो गया है, उनकी बहुत कुछ कल्पना या एक हद तक रचना संभवतः पुराण काल में ही हो चुकी थी।

भारतीय अस्त्रों को सामान्यतः पांच हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है। ये पांचों ही हिस्से पौराणिक काल से लेकर आधुनिक युग तक किसी न किसी आयुध के रूप में आकार–प्रकार अथवा कार्य की दृष्टि से समेटे जा सकते हैं।

(1) वे हथियार, जो शत्रु को क्षत–विक्षत कर देते थे या कि काट ही डालते हैं।

(2) दूरमारक, फेंके जाने वाले अस्त्रों के रूप में जो शत्रु या शत्रुपक्ष को अपने से एक खास दूरी बनाए रख कर नष्ट कर सकते हैं।

(3) वे हथियार, जिनसे शत्रु के प्रहार या आक्रमण को रोका जा सकता है या कि रोकने का त्वरित प्रयास किया जा सकता है।

(4) ऐसे हथियार, जो उछालकर फेंके जाते हैं तथा पत्थर मारने की तरह फेंके जाते हैं।

(5) वे हथियार, जिनके प्रहार से किसी शत्रु का या उसके पक्ष का नाश किया जा सकता है।

इन पांचों ही किस्मों के उदाहरण रूप में यदि हम देखें तो क्रमशः (1) तलवार या खंग; (2) धनुष–बाण, भाले; (3) ढाल, कवच; (5) गदा, लाठी या डंडा, चाबुक आदि आते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. डॉ0 फुलेश्वर सिंह, प्राचीन भारत, पटना, पृ0– 67।
2. ए0एल0 वाशम, द वन्डर हैट वाज इंडिया।
3. डॉ0 कुमार अमरेन्द्र, शस्त्रास्त्र और देश, मोतीलाल बनासी दास, भूमिका, पृ. 6।
4. ए0के0 प्रसाद, द रिमेंश आफ चाल को लिथिक कल्चर ऑफ इंडिया विथ स्पेशल रिफरेंश टू वीपन, पृ. 91–93।
5. विशम्भर नाथ पाण्डेय, भारत और मानव संस्कृति, खण्ड– एक, सूचना और प्रसारण विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, पृ0– आमुख 22।

RRIJM 2015, All Rights Reserved